E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 13-01-2025
Accepted: 23-03-2025
Published: 30-04-2025

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 2; 2025; Page No. 586-589

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षा प्रणाली: एक तुलनात्मक अध्ययन

Shalu

Assistant Professor, Department of Hindi, Shah Satnam Ji Girls' College, Sirsa, Haryana, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20528648

Corresponding Author: Shalu

सारांश

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास का आधार होती है। भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल प्रणाली पर आधारित थी, जिसमें विद्यार्थियों के नैतिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा शारीरिक विकास पर विशेष बल दिया जाता था। गुरुकुल शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मनिर्भरता, अनुशासन तथा जीवन मूल्यों का विकास करना था। इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली विज्ञान, तकनीकी, व्यावसायिक कौशल तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर आधारित है, जो विद्यार्थियों को रोजगार एवं आधुनिक जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करती है।

प्रस्तुत अध्ययन में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। इसमें दोनों प्रणालियों के उद्देश्य, शिक्षण पद्धति, गुरु-शिष्य संबंध, शिक्षा का वातावरण, नैतिक मूल्यों, जीवन कौशल तथा विषय-वस्तु के स्वरूप का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली नैतिकता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता एवं व्यक्तित्व निर्माण में अधिक प्रभावी थी, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी दक्षता, रोजगार सृजन तथा वैश्विक अवसरों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि दोनों प्रणालियों में कुछ सीमाएँ विद्यमान हैं। गुरुकुल प्रणाली में आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा का अभाव था, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों, गुरु-शिष्य संबंधों तथा जीवन कौशलों पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि शिक्षा के समग्र एवं संतुलित विकास हेतु गुरुकुल शिक्षा की नैतिकता, अनुशासन और भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा की वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टि के साथ समन्वित करना आवश्यक है। ऐसा समन्वय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

मूल शब्दः गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक शिक्षा, नई शिक्षा नीति 2020, सर्वांगीण विकास।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है। शिक्षा ही मनुष्य को सही और गलत का ज्ञान कराती है तथा उसे समाज में सम्मानपूर्वक जीवन जीने योग्य बनाती है। किसी भी देश की प्रगति उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान और शिक्षा का केंद्र रहा है। वर्षों की शिक्षा पद्धति में भी विश्व की ज्ञान परंपरा का विशेष महत्व है। प्राचीन भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी, जबकि वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्रभाव अधिक दिखाई देता है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित थी। इस प्रणाली में विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। वहीं दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा प्रणाली विज्ञान, तकनीकी और ज्ञान के नवीनतम साधनों पर आधारित है। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। आज

कंप्यूटर, इंटरनेट, डिजिटल शिक्षा और तकनीकी साधनों ने शिक्षा को सरल और व्यापक बना दिया है।

हालाँकि दोनों शिक्षा प्रणालियों का उद्देश्य विद्यार्थियों का विकास करना है, लेकिन उनकी कार्यप्रणाली, पद्धति, वातावरण और प्रभाव में बहुत अंतर देखने को मिलता है। एक ओर गुरुकुल शिक्षा विद्यार्थियों के नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर बल देती थी, वहीं आधुनिक शिक्षा विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धा और रोजगार के लिए तैयार करती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि दोनों प्रणालियों के श्रेष्ठ गुणों को अपनाकर ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित की जाए जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो। इसी उद्देश्य से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का अर्थ

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति थी जिसमें विद्यार्थी अपने गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। 'गुरुकुल' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– 'गुरु' अर्थात शिक्षक और 'कुल' अर्थात परिवार या आश्रम। इसका अर्थ है गुरु का आश्रम जहाँ विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे।

इस प्रणाली में शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं थी, बल्कि विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला भी सिखाई जाती थी। विद्यार्थी गुरु के साथ रहकर अनुशासन, सेवा, आत्मनिर्भरता, विनम्रता और नैतिक मूल्यों को सीखते थे। गुरुकुल प्रायः प्राकृतिक वातावरण में स्थित होते थे जहाँ शांत वातावरण में अध्ययन कराया जाता था।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में गुरु का स्थान अत्यंत उच्च माना जाता था। गुरु केवल शिक्षक नहीं बल्कि मार्गदर्शक और संरक्षक भी होते थे। विद्यार्थी गुरु की सेवा करते हुए शिक्षा प्राप्त करते थे। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि उत्तम चरित्र का निर्माण करना भी था।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अर्थ

आधुनिक शिक्षा प्रणाली वर्तमान समय की शिक्षा व्यवस्था है जिसमें विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है। इस प्रणाली में विज्ञान, गणित, कंप्यूटर, तकनीकी, व्यवसाय, चिकित्सा तथा अन्य आधुनिक विषयों का अध्ययन कराया जाता है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को रोजगार, प्रतिस्पर्धा और आधुनिक जीवन के लिए तैयार करना है। इसमें परीक्षा प्रणाली, अंक आधारित मूल्यांकन और तकनीकी साधनों का अधिक उपयोग किया जाता है।

आज के समय में स्मार्ट क्लास, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल बोर्ड, इंटरनेट और ई-लर्निंग के माध्यम से शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाया जा रहा है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने विश्व की विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में नई उपलब्धियाँ पहुँचाई हैं।

गुरुकुल और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अंतर

1. शिक्षा का उद्देश्य

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और आत्मज्ञान प्राप्त कराना था। इसमें शिक्षा को जीवन सुधारने का माध्यम माना जाता था।

इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य रोजगार प्राप्त करना, आर्थिक विकास करना और प्रतिस्पर्धा में सफलता प्राप्त करना है। आधुनिक शिक्षा अधिक व्यावसायिक बनती जा रही है।

2. शिक्षा का वातावरण

गुरुकुल प्राकृतिक वातावरण में स्थित होते थे। विद्यार्थी प्रकृति के बीच रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे। इससे उनका मानसिक और शारीरिक विकास संतुलित रूप से होता था।

आधुनिक विद्यालयों में आधुनिक भवन, प्रयोगशालाएँ, कंप्यूटर और तकनीकी साधनों का उपयोग किया जाता है। यहाँ शिक्षा अधिक सुविधाजनक और तकनीकी हो गई है।

3. गुरु और विद्यार्थियों का संबंध

गुरुकुल प्रणाली में गुरु और शिष्य का संबंध अत्यंत घनिष्ठ और सम्मानपूर्ण होता था। गुरु विद्यार्थियों को अपने परिवार के सदस्य की तरह मानते थे। विद्यार्थी गुरु का आदर करते थे और उनकी सेवा भी करते थे।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक और विद्यार्थियों का संबंध अधिक औपचारिक हो गया है। समय की कमी और बढ़ती व्यस्तताओं के कारण दोनों के बीच पहले जैसी निकटता नहीं रही।

4. शिक्षा की पद्धति

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में मौखिक शिक्षा, संवाद, चर्चा और व्यावहारिक ज्ञान पर बल दिया जाता था। विद्यार्थी अनुभव के माध्यम से सीखते थे।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पुस्तककीय ज्ञान, परीक्षा प्रणाली और अंक आधारित मूल्यांकन को अधिक महत्व दिया जाता है। यहाँ रटने की प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रही है।

5. अनुशासन और नैतिकता

गुरुकुल प्रणाली में अनुशासन, संयम, सेवा और नैतिक मूल्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता था। विद्यार्थियों को सात्विकपूर्ण जीवन जीने की शिक्षा दी जाती थी।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का महत्व कम होता जा रहा है। आज विद्यार्थी अधिक तनाव और प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं।

6. विषयों का स्वरूप

गुरुकुलों में वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, दर्शन, ज्योतिष और शास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा, कंप्यूटर, इंजीनियरिंग और व्यावसायिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है।

7. जीवन कौशल

गुरुकुल प्रणाली विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाती थी। विद्यार्थी स्वयं के कार्य स्वयं करते थे और श्रम का महत्व समझते थे।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशल की शिक्षा सीमित हो गई है। विद्यार्थी अधिकतर पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित रहते हैं।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के लाभ

1. **चरित्र निर्माण पर बल:** गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा लाभ यह था कि इसमें विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। विद्यार्थियों को सत्य, ईमानदारी, विनम्रता और सेवा भावना की शिक्षा दी जाती थी।
2. **नैतिकता और आध्यात्मिक विकास:** इस प्रणाली में नैतिकता और आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण स्थान था। विद्यार्थी धर्म, संस्कार और जीवन मूल्यों को सीखते थे।
3. **अनुशासन और आत्मनिर्भरता:** गुरुकुल में विद्यार्थी अनुशासित जीवन जीते थे। वे अपने दैनिक कार्य स्वयं करते थे जिससे उनमें आत्मनिर्भरता का विकास होता था।
4. **गुरु-शिष्य संबंध की मजबूती:** गुरुकुल प्रणाली में गुरु और शिष्य के बीच गहरा संबंध होता था। इससे विद्यार्थियों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त होता था।
5. **प्रकृति के निकट शिक्षा:** प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थियों का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता था।
6. **मानसिक और शारीरिक विकास:** योग, ध्यान और व्यायाम के माध्यम से विद्यार्थियों का शारीरिक और मानसिक विकास संतुलित रूप से होता था।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की सीमाएँ

1. **आधुनिक विज्ञान और तकनीकी का अभाव:** गुरुकुल प्रणाली में आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा का अभाव था।
2. **सीमित विषयों का अध्ययन:** इस प्रणाली में केवल पारंपरिक विषयों को अधिक महत्व दिया जाता था।
3. **सभी वर्गों तक शिक्षा का समान रूप से न पहुँचना:** प्राचीन समय में शिक्षा सभी वर्गों तक समान रूप से उपलब्ध नहीं थी।
4. **शोध और तकनीकी विकास की कमी:** गुरुकुल प्रणाली में वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी विकास पर कम ध्यान दिया जाता था। गुरुकुल प्रणाली में वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी विकास पर कम ध्यान दिया जाता था।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लाभ

1. **विज्ञान और तकनीकी ज्ञान का विकास:** आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति की है।
2. **रोजगार के अवसरों में वृद्धि:** आज की शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त करने योग्य बनाती है।
3. **वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा की क्षमता:** आधुनिक शिक्षा विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार करती है।
4. **डिजिटल और व्यावसायिक शिक्षा:** कंप्यूटर, इंटरनेट और ऑनलाइन शिक्षा ने सीखने की प्रक्रिया को आसान और प्रभावी बना दिया है।
5. **सभी वर्गों के लिए शिक्षा की उपलब्धता:** आज सरकार और विभिन्न संस्थाएँ सभी वर्गों तक शिक्षा पहुँचाने का प्रयास कर रही हैं।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली की सीमाएँ

1. **नैतिक मूल्यों में कमी:** आधुनिक शिक्षा में नैतिक शिक्षा का महत्व कम हो गया है जिससे सामाजिक समस्याएँ बढ़ रही हैं।
2. **विद्यार्थियों पर परीक्षा का दबाव:** अंक और प्रतियोगिता के कारण विद्यार्थियों पर मानसिक दबाव बढ़ गया है।
3. **शिक्षा का व्यावसायीकरण:** आज शिक्षा एक व्यवसाय बनती जा रही है। महँगी शिक्षा के कारण गरीब वर्ग के लिए कठिनाइयाँ बढ़ रही हैं।
4. **शिक्षक और विद्यार्थियों के संबंधों में दूरी:** आधुनिक शिक्षा में शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच आत्मीयता कम होती जा रही है।
5. **व्यावहारिक जीवन कौशल की कमी:** विद्यार्थियों में व्यावहारिक ज्ञान और जीवन कौशल का अभाव दिखाई देता है।

नई शिक्षा नीति 2020 और भारतीय शिक्षा

भारत सरकार द्वारा लागू की गई नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने का प्रयास है। इस नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा के समन्वय पर बल दिया गया है।

नई शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा, कौशल विकास, नैतिक शिक्षा, योग, भारतीय संस्कृति और तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है। यह नीति विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देती है।

इस नीति का उद्देश्य केवल रोजगार आधारित शिक्षा देना नहीं बल्कि विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनाना भी है। इसमें गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सकारात्मक पहलुओं को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है।

गुरुकुल और आधुनिक शिक्षा का समन्वय

वर्तमान समय में ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जिसमें गुरुकुल शिक्षा की नैतिकता और आधुनिक शिक्षा की वैज्ञानिक दृष्टि शामिल हो।

विद्यार्थियों को तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ नैतिक मूल्य, अनुशासन, योग, ध्यान और भारतीय संस्कृति की शिक्षा भी दी जानी चाहिए। शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं बल्कि जीवन निर्माण का माध्यम होनी चाहिए।

यदि गुरुकुल प्रणाली की सादगी, अनुशासन और नैतिकता को आधुनिक विज्ञान और तकनीक के साथ जोड़ दिया जाए तो शिक्षा अधिक प्रभावी और उपयोगी बन सकती है।

उपसंहार

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षा प्रणाली दोनों का अपना-अपना महत्व है। गुरुकुल प्रणाली ने भारतीय संस्कृति, नैतिकता और जीवन मूल्यों को सुरक्षित रखने का कार्य किया, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने विज्ञान, तकनीक और वैश्विक विकास को बढ़ावा दिया।

आज आवश्यकता इस बात की है कि दोनों प्रणालियों के श्रेष्ठ गुणों को अपनाकर ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित की जाए जो विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, नैतिक और बौद्धिक विकास कर सके।

यदि शिक्षा में नैतिकता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और आधुनिक ज्ञान का संतुलन स्थापित हो जाए तो भारत पुनः विश्वगुरु बनने की दिशा में अग्रसर हो सकता है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं बल्कि एक श्रेष्ठ और जिम्मेदार नागरिक का निर्माण करना होना चाहिए।

संदर्भ

1. शर्मा, रामनाथ - भारतीय शिक्षा का इतिहास, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।
2. डॉ. एस.पी. गुप्ता - प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय।
3. आचार्य बलदेव उपाध्याय - भारतीय संस्कृति और शिक्षा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
4. डॉ. कृष्ण कुमार - शिक्षा और समाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. नई शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय।
6. Swami Vivekananda - शिक्षा पर विचार, अद्वैत आश्रम प्रकाशन।
7. Mahatma Gandhi - बेसिक एजुकेशन, नवजीवन प्रकाशन।
8. Sarvepalli Radhakrishnan - भारतीय दर्शन और शिक्षा, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. National Council of Educational Research and Training (NCERT) - भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति संबंधी पुस्तकें।
10. education.gov.in
11. ncert.nic.in
12. dli.gov.in

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.